κοίλη φίλορνις, ποιμένων ἐπιστροφή·
(Βρόμιος δ' ἔχει τὸν χῶρον, † οὐδ' ἀμνημονῶ,
ἐξ οὗτε Βάκχαις ἐστρατήγησεν θεὸς
λαγὼ δίκην Πενθεῖ καταρράψας μόρον·)
Πλειστοῦ δὲ πηγὰς καὶ Ποσειδῶνος κράτος
καλοῦσα καὶ τέλειον ὕψιστον Δία
ἔπειτα μάντις ἐς θρόνους καθιζάνω.
καὶ νῦν τυχεῖν με τῶν πρὶν † εἰσόδων μακρῷ
ἄριστα † δοῖεν· κεἰ πάρ' Ἑλλήνων τινές,
ἴτων πάλῳ λαχόντες, ὡς νομίζεται.
μαντεύομαι γὰρ ὡς ἂν ἡγῆται θεός.
ἦ δεινὰ λέξαι, δεινὰ δ' ὀφθαλμοῖς δρακεῖν,
πάλιν μ' ἔπεμψεν ἐκ δόμων τῶν Λοξίου,
ὡς μήτε σωκεῖν μήτ' ἔτ' ἀκταίνειν βάσιν.
ἕρπω δὲ χερσίν, οὐ ποδωκείᾳ σκελῶν·
δείσασα γὰρ γραῦς οὐδέν, ἀντίπαις μὲν οὖν.

23. *ἀναστροφά* M. G. *ἀναστροφαί* Fl. F. V. Herm. *ἀναστροφή* schol. Pal. Sidg. *ἐπιστροφαί* recte Burges. et Headlam, coll. Fr. 249. 271. Sept. 648. Eur. Hel. 441. Adesp. 162. (Anglice haunts, resorts. Cf. 548.) *ἐπιστροφή* Nauck. Post h. v. lacunam indicat Herm.

24. *δ' ἔχει* G. Fl. F. V. *ἔχει* M. *οὐδ' ἀμνημονῶ*] *οὐκ ἀμνήμονα* (fama celebratum) Herw. Latet, ni fallor, vitium.

25 sq. *Βάκχαις αἷς στρατηγήσας — κατέρραψεν* Burg.

25. *οὗ τε* mss. *οὗ γε* Porson.

27. *πλείστους* (*πλήστους* M. pr.) mss. *Πλειστοῦ* Turn. Stanl. Dobr. etc. Correctum ex Etym. M. p. 671, 5. etc. *τε* mss. Leg. *δέ*.

28. *καλοῦσα*] Qu. *κλέουσα* (*κλείουσα*, *κλῄζουσα*).

30 sq. Vitium latere videtur.

30. *εἰσόδων*] Corruptum. Qu. *ἱερειῶν*, vel *εἰποῦσαν*.

31. *δοῖεν*] Qu. *δοῦσαν* —. *κεἰ παρ' Ἑλλήνων τινὲς*] Qu. *κεἰ 'νθάδ'* —.

32. *παρ'* M. Dind. *πάρ'* Abr. Herm. *κεἴ τις Ἑλλήνων πάρα* Burges. *ἴτων* M. G. V. *ἴτην* Fl. F.

35. Paragraphus praefixa in M.

36. Qu. *ὡς μηδὲ σωκεῖν μηκέτ' ἀκταίνειν βάσιν.* *μήτε μ' ἀκταίνειν* mss. Corrige *μήτ' ἔτ' ἀκταίνειν*. Ita intransitivum fit *ἀκταίνειν*. Cf. ad Fr. 416. Ad *βάσιν* cf. Soph. Tr. 967. *στάσιν* (*γρ. βάσιν* sup. sec. m. M.) mss. Well.

37. *τρέχω* mss. *στείχω* aut *χωρῶ* Sch. Fort. *ἕρπω*. Cf. 39. Sed obstat fortasse *ποδωκείᾳ* (celeritate). *ποδωκίᾳ* M. *ποδωκείᾳ* apogr.

38. *δείσασα γὰρ γραῦς οὐδέν, ἀντίπαις μὲν οὖν* mss. *δείσασα γὰρ γραῦς ἀντίπαις, οὐδὲν μὲν οὖν* Herwerden, coll. Ag. 1396. *τάδ' ἂν δικαίως ἦν, ὑπερδίκως μὲν οὖν.* Recte, opinor.

SLUB Wir führen Wissen. UNIVERSITÄT LEIPZIG